International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 6, June- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

कारक (अथ चतुर्थी विभक्तिः)

शालिनी जोशी
दिवराला, सीकर, राजस्थान

प्रस्तावना -

संस्कृत व्याकरण में वाक्यों की शुद्धता के लिए संधि ,समास ,प्रत्यय ,कारक ,धातु आदि नियम बनाए गए हैं। कारक का अर्थ है करने वाला अर्थात क्रिया को पूरी तरह करने में किसी न किसी भूमिका को निभाने वाला। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से पता चले उसे कारक कहते हैं।इस तरह कारक 6 प्रकार के बताए गए हैं कर्ता ,कर्म ,करणं, सम्प्रदान, अपादान एवं अधिकरण । सम्बोधन को कारक न मानकर संबंध होने का बोध हो वह माना गया है क्योंकि सम्बोधन का संबंध क्रिया से साक्षात नहीं होता है अर्थात "क्रियान्वयित्वं कारकत्वं" यह लक्षण उसमें घटित नहीं होता । कारक प्रकरण विशेषता स्वादी प्रत्यय का अर्थ बताने के लिए कारक प्रकरण का आरंभ किया है ।

कर्ता कर्म करणं च सम्प्रदानं तदेव च
अपादानाधिकरण मित्याहु : कारकाणि षट्।।

*अथ चतुर्थी विभक्ति अर्थात् सम्प्रदान संज्ञा का नियम लिखा जाएगा।

चतुर्थी विभक्ति

१. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् :-दानस्य कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानसंज्ञः स्यात्। अर्थात दान के कर्म के द्वारा जिसे भोक्ता बनाया जाए वह कारक संप्रदान संज्ञक होता है।

२. चतुर्थी सम्प्रदाने :- सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।

उदाहरण - "विप्राय गां ददाति " (ब्राह्मण को गाय देता है)। यहां विप्र में सम्प्रदान संज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति होती है।
भाष्यकारानुसार उदाहरण : रजकाय वस्त्रं ददाति ।

३. क्रियया यमभिप्रैति सोअपि सम्प्रदानम् :- क्रिया के द्वारा जिससे संबंध स्थापित करें वह भी सम्प्रदान संज्ञा होता है।
उदाहरण:- पत्ये शेते(पति के लिए सोती है)

४." यजे: कर्मण: करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च
कर्मसंज्ञा ":- एक ही वाक्य में यज् धातु के योग में यज् के कर्म को करण संज्ञा (तृतीया विभक्ति) एवं सम्प्रदान को कर्म संख्या होती है।
उदाहरण:- पशुं रूद्राय ददाति (रुद्र के लिए पशु को देता है) यहां सम्प्रदान रुद्र को कर्मसंज्ञा कर्मणि द्वितीया

५. रूच्यर्थानां प्रीयमाणा: :- रुच्यर्थानां धातुनां प्रयोगे प्रीयमाणो अर्थ: सम्प्रदानं स्यात्। रूचि अर्थ वाले धातुओं के प्रयोग में प्रियमाण को संप्रदान संज्ञा होती है।
उदाहरण :- हरये रोचते भक्ति। (हरि को भक्ति अच्छी लगती है)

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 6, June- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

६.श्लाघहुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमान: - एषां प्रयोगे बोधयितुमिष्ट: सम्प्रदानं स्यात्। श्लाघ , ह्नुङ्, स्था, एवं शप् धातुओं के प्रयोग में ज्ञीप्स्यमान की (जिसे अपना आशय समझना अभीष्ट है)उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।

उदाहरण:- गोपी स्मरात् कृष्णाय श्लाघते ह्नुते तिष्ठते शपते वा।

७. धारेरूत्तमर्ण: :- धारयते प्रयोग

प्रस्तावना -

संस्कृत व्याकरण में वाक्यों की शुद्धता के लिए संधि ,समास ,प्रत्यय ,कारक ,धातु आदि नियम बनाए गए हैं। कारक का अर्थ है करने वाला अर्थात क्रिया को पूरी तरह करने में किसी न किसी भूमिका को निभाने वाला। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से पता चले उसे कारक कहते हैं।इस तरह कारक 6 प्रकार के बताए गए हैं कर्ता ,कर्म ,करणं, सम्प्रदान, अपादान एवं अधिकरण । सम्बोधन को कारक न मानकर संबंध होने का बोध हो वह माना गया है क्योंकि सम्बोधन का संबंध क्रिया से साक्षात नहीं होता है अर्थात "क्रियान्वयित्वं कारकत्वं" यह लक्षण उसमें घटित नहीं होता । कारक प्रकरण विशेषता स्वादी प्रत्यय का अर्थ बताने के लिए कारक प्रकरण का आरंभ किया है।

कर्ता कर्म करणं च सम्प्रदानं तदेव च
अपादानाधिकरण मित्याहु : कारकाणि षट्।।
*अथ चतुर्थी विभक्ति अर्थात् सम्प्रदान संज्ञा का नियम लिखा जाएगा।

चतुर्थी विभक्ति

१. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् :-
दानस्य कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानसंज्ञ: स्यात्। अर्थात दान के कर्म के द्वारा जिसे भोक्ता बनाया जाए वह कारक संप्रदान संज्ञक होता है।

२. चतुर्थी सम्प्रदाने :- सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है।

उदाहरण - "विप्राय गां ददाति " (ब्राह्मण को गाय देता है)। यहां विप्र में सम्प्रदान संज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति होती है।
भाष्यकारानुसार उदाहरण : रजकाय वस्त्रं ददाति ।

३. क्रियया यमभिप्रैति सोअपि सम्प्रदानम् :-
क्रिया के द्वारा जिससे संबंध स्थापित करें वह भी सम्प्रदान संज्ञा होता है।
उदाहरण:- पत्ये शेते(पति के लिए सोती है)

४." यजे: कर्मण: करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च
कर्मसंज्ञा ":- एक ही वाक्य में यज् धातु के योग में यज् के कर्म को करण संज्ञा (तृतीया विभक्ति) एवं सम्प्रदान को कर्म संख्या होती है।

उदाहरण:- पशुं रूद्राय ददाति (रुद्र के लिए पशु को देता है) यहां सम्प्रदान रुद्र को कर्मसंज्ञा कर्मणि द्वितीया

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 6, June- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

५. रूच्यर्थानां प्रीयमाणा: :- रुच्यर्थानां धातुनां प्रयोगे प्रीयमाणो अर्थ: सम्प्रदानं स्यात्। रूचि अर्थ वाले धातुओं के प्रयोग में प्रियमाण को संप्रदान संज्ञा होती है।
उदाहरण :- हरये रोचते भक्ति। (हरि को भक्ति अच्छी लगती है)

६.श्लाघहुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमान: :- एषां प्रयोगे बोधयितुमिष्ट: सम्प्रदानं स्यात्। श्लाघ , ह्नुङ्, स्था, एवं शप् धातुओं के प्रयोग में ज्ञीप्स्यमान की (जिसे अपना आशय समझना अभीष्ट है)उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।

उदाहरण:- गोपी स्मरात् कृष्णाय श्लाघते ह्नुते तिष्ठते
शपते वा।

७. धारेरूत्तमर्ण: :- धारयते प्रयोगे उत्तमर्ण उक्तसंज्ञ स्यात्।
उदाहरण :- भक्ताय धारयति मओक्षं हरि (ण्यन्त धातु के प्रयोग में उत्तमर्ण (ऋणदाता) सम्प्रदान संज्ञा होती है।

८. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः :- क्रुधाद्यर्थानां प्रयोगे यं प्रति कोप:स: उक्तसंज्ञा स्यात्। क्रुध् , द्रुह्, ईर्ष्य एवं असूञ् धातुओं तथा इनके समानार्थक धातुओं के प्रयोग में जिनके प्रति को किया जाए सम्प्रदान संज्ञा होती है।
उदाहरण:- हरये क्रुध्यति,द्ह्राति,ईष्यति,असूयति वा ।

९. क्रुधदुहोरूपसृष्ट्यो: कर्म :- सोपसर्गयोरनयोर्योगे यं प्रति कोपः तत्कारकं कर्म स्यात्। उपयुक्त क्रुध् एवं द्रुह्, धातु का प्रयोग होने पर जिसके प्रति कोप किया जाये उस कारक को कर्मसंज्ञा होती है।
उदाहरण :- क्ररमभिक्रुध्यति,अभिद्रुह्रति वा ।

१०. राधीक्ष्योर्यस्य विप्रशन: :- एतयोः कारकं सम्प्रदानं स्यात् , यदीयो विविध प्रश्न: क्रियते। राध् एवं ईक्ष् हाथों के योग में जिसके विषय में विविध प्रश्न पूछा जाता है उस कारक को सम्प्रदान संज्ञा होती है।

उदाहरण :- कृष्णाय राध्यति,ईक्षते वा (राध् तथा इक्ष् धातु का प्रयोग करने के कारण कृष्ण को संप्रदान संज्ञा होती है)

११ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता :- आभ्यां परस्य श्रृणोतेर्योगे पूर्वस्य प्रवर्तनारूपस्य व्यापारस्य कर्ता सम्प्रदानं स्यात्। प्रति अथवा आङ् से पर श्रु धातु के योग में प्रेरणा रूप पूर्व के व्यापार (क्रिया) के करता की सम्प्रदान संज्ञा होती है।
उदाहरण :- विप्राय गां प्रतिश्रुणोति आश्रुणोति वा ।
यहां भी विप्र में सम्प्रदान संज्ञा कर चतुर्थी विभक्ति होती है।

१२. अनुप्रतिगृणशच :- अभ्यां गृणाते: कारकं पूर्वव्यापारस्य कतृभूतमुक्तसंज्ञ स्यात्। अर्थात अनु पूर्वक गृधातु तथा प्रति पूर्वक गृधातु के योग में पूर्व व्यापार के कर्तृभूत कारक को सम्प्रदान संज्ञा होती है।
उदाहरण :- होत्रेऽनुगृणाति, प्रतिगृह्णाति वा।

१३. परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम् :- नियतकालं भृत्या स्वीकरणं ,परिक्रयणे , तस्मिन् साधकतमं कारकम् सम्प्रदानसंज्ञा वा स्यात्। अर्थात निश्चित समय तक वेतन देकर किसी को नौकर रखना परिक्रयण कहलाता है।परिक्रयण अर्थ में साधकतम कारक की सम्प्रदान संज्ञा होती है।
उदाहरण :- शतेन शताय वा परिक्रीत:।
यहां पर शत को संप्रदान संज्ञा होने पर उसमें चतुर्थी कर 'शताय'बनता है। विकल्प में शतेन तृतीय विभक्ति होती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 6, June- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

=वार्तिकम् =

१. तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्यम् :- जिस प्रयोजन के लिए कोई क्रिया की जाए उसमें चतुर्थी होती है।
उदाहरण :- मुक्तये हरिं भजति।

२. क्लृपि सम्पद्यमाने च :- क्लृप धातु का प्रयोग होने पर सम्पद्यमान अर्थ में उत्पन्न होने वाले या परिणत होने वाले से चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण :- भक्तिज्ञानाय कल्पते,सम्पद्यते, जायते वा।

३. उत्पातेन ज्ञापिते च :- उत्पात(अशुभ सूचक आकस्मिक) से सूचित अर्थ में चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण :- वाताय कपिला विद्युत।

४. हितयोगे च :- हित शब्द के योग में जिसका हित हो उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण :- ब्राह्मणाय हितं।

(अथ उप्पदचतुर्थीविभक्तिः)

१. क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि:स्थानिनः :-
क्रियार्थो क्रिया उपपदं यस्य तस्य
स्थानिनोऽप्रयुज्यमानस्य तुमुन: कर्मणि चतुर्थी स्यात् ।
क्रियाफलक क्रिया जिस तुमन् प्रत्यायन्त पद का उपपद हो तथा तुमन् प्रत्यायन्त का प्रयोग न हुआ हो किंतु अप्रयुज्यमान तुमन् प्रत्यायन्त के कर्म में चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण :- फलेभ्यो याति ।
नमस्कुर्मो नृसिंहा।

२.तुमर्थाच्च भाववचनात् :-
भाववचनाश्चेति सुत्रेण यो विहितस्तदन्ताच्चतुर्थी स्यात्। अर्थात भाववचनाश्चेति सूत्र मैं तुमन् प्रत्यय के अर्थ के सम्मान अर्थ मैं विहित जो घञ् आदि प्रत्यय , तदन्त शब्द से चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण :- यागाय याति ।

३. नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च :-
एभिर्योगे चतुर्थी स्यात्।
उदाहरण :- हरये नमः
प्रजाभ्यः स्वस्ति
अग्नये स्वाहा
पितृभ्य स्वधा
दैत्येभ्यो हरिः अलम्
वषड्इन्द्राय ।

४. मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु :-
प्राणिवर्जे मन्यते कर्मणि चतुर्थी वा स्यात् तिरस्कारे। अर्थात अनादर अर्थ के गम्यमान होने पर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 6, June- 2022
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |**Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015**

दिवादिगण पठित मन् धातु के प्राणी भिन्न कर्म में विकल्प से चतुर्थी विभक्ति होती है।
उदाहरण :- न त्वां तृणं मन्ये,तृणाय वा ।

वार्तिक :- अप्राणिष्वित्यपनीय नौकाकान्नशुकश्वृगालवर्जेष्विति वाच्यम् ।
'न त्वां नवाम् अन्नं वा मन्ये' इस वाक्य में नौ एवं प्राणिभिन्न है। अतः मन्यकर्मण्यनादरे सूत्र की प्रवृत्ति होने से नौ एवं अन्न से चतुर्थी के विकल्प से होने पर यह अतिव्याप्त होगा तथा "न त्वां शुने मन्ये" इस वाक्य में मन्य का कर्म प्राणी है प्राणी से भिन्न नहीं है ।अतः मन्यकर्मण्यनादरे की प्रवृत्ति नहीं होगी तथा 6 लक्षण व्याप्ति दोष ग्रस्त होगा इन दोनों देशों के लिए यह वार्तिक बनाया गया है।

उदाहरण :- न त्वां नवाम् ,अन्नं वा मन्ये ।
न त्वां शुने मन्ये।
न त्वां काकं मन्ये।

४.गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि
:-अध्वभिन्ने गत्यर्थानां कर्मण्येते स्तश्चेष्टायाम् ।
अर्थात गत्यर्थ धातुओं के कर्म में द्वितीया और चतुर्थी दोनों होती है ,यदि गति में शारीरिक चेष्टा हो और गत्यर्थक धातुओं का कर्म अध्वा मार्गवाची ना हो तब ।
उदाहरण :- ग्राम ग्रामाय वा गच्छति।
यहां गम धातु का कर्म ग्राम है। इसमें द्वितीया-चतुर्थी क्रमशः होती है।

इस प्रकार कारक प्रकरण के चतुर्थी विभक्ति का नियमानुसार वर्णन है।